Toppersnotes®
Unleash the topper in you

ASI & HC

BSF / CRPF / ITBP
CISF / SSB / AR

भाग – 1 (अ)

सामान्य हिंदी एवं कंप्यूटर ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	हिंदी भाषा का परिचय	1
2	संज्ञा	5
3	सर्वनाम	7
4	वर्ण विचार	8
5	वर्तनी शुद्धि	12
6	तत्सम - तद्भव शब्द	26
7	पर्यायवाची	28
8	विलोम शब्द	30
9	अनेकार्थक शब्द	36
10	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	39
11	समश्रुत भिन्नार्थक शब्द	45
12	वाक्य विचार	48
13	लिंग	56
14	वचन	60
15	कारक	61
16	विशेषण	64
17	क्रिया	65
18	काल	72
19	वाच्य	74
20	अव्वय - अविकारी शब्द	76
21	उपसर्ग	80
22	प्रत्यय	89
23	संधि	97

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	समास	113
25	विराम चिन्ह	119
26	मुहावरे	122
27	लोकोक्तियाँ	128
28	रस	131
29	छंद	134
30	अलंकार	142
31	अपठित गद्यांश	146
32	हिंदी के प्रसिद्ध कवि एवं उनकी रचनाएँ	153
33	हिंदी भाषा में पुरस्कार	156
34	कंप्यूटर का परिचय	160
35	कंप्यूटर की कार्य प्रणाली, इनपुट, आउटपुट एवं भण्डारण	163
36	कंप्यूटर प्रणाली बाइनरी, डेसीमल आस्की कोड व यूनिकोड	167
37	कंप्यूटर का संगठन	170
38	कंप्यूटर की भाषाए	173
39	कंप्यूटर सॉफ्टवेर	175
40	ऑपरेटिंग सिस्टम	176
41	मैक्रोसोफ्ट, विण्डोस, उसके विभिन्न वर्जन व उसके मुलभुत अवयक	177
42	वर्ड प्रोसेसिंग सॉफ्टवेर	178
43	माइक्रोसॉफ्ट पॉवर पॉइंट	180
44	माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल स्प्रेडशीट सॉफ्टवेर	182
45	इन्टरनेट	188
46	कंप्यूटर नेटवर्किंग	191

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
47	नेटवर्क टोपोलॉजी	193
48	वेबसाइट	195
49	डेटाबेस	197
50	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी	202
51	कंप्यूटर संक्षिप्ताक्षर (Abbreviations)	214

1 CHAPTER भाषा

"भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से मनुष्य बोलकर, लिखकर या संकेत पर परस्पर अपना विचार सरलता, स्पष्टता, निश्चितता तथा पूर्णता के साथ प्रकट करता है।

बोली

"बोली किसी भाषा के एक ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते है जो ध्वनि, रूप, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरे आदि की दृष्टि से उस भाषा के परिनिष्ठित तथा अन्य क्षेत्रीय रूपों से भिन्न होता है; किन्तु इतना भिन्न नहीं कि अन्य रूपों के बोलनेवाले उसे समझ न सकें, साथ ही जिसके अपने क्षेत्र में कहीं भी बोलनेवालों के उच्चारण, रूप-रचना, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरों आदि में कोई बहुत स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण भिन्नता नहीं होती।"

भाषा का क्षेत्र व्यापक हुआ करता है। इसे सामाजिक, साहित्यिक, राजनैतिक, व्यापारिक आदि मान्यताएँ प्राप्त होती है; जबकि बोली को मात्र सामाजिक मान्यता ही मिल पाती है। भाषा का अपना गठित व्याकरण हुआ करता है; परन्तु बोली का कोई व्याकरण नहीं होता। हाँ, बोली ही भाषा को नये-नये बिम्ब, प्रतीकात्मक शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि समर्पित करती है। जब कोई बोली विकास करते-करते उक्त सभी मान्यताएँ प्राप्त कर लेती है, तब वह वोली न रहकर भाषा का रूप धारण कर लेती है। जैसे- खडी बोली हिन्दी जो पहले (द्विवेदी - युग से पूर्व) मात्र प्रांतीय भाषा या बोली मात्र थी वह आज भाषा ही नहीं राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त कर चुकी है।

एक बोली जब मानक भाषा बनती है और प्रतिनिधि हो जाती है तो आस-पास की बोलियों पर उसका भारी प्रभाव पड़ता है। आज की खडी बोली ने ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि सभी को प्रभावित किया हैं। हाँ, यह भी देखा जाता है कि कभी-कभी मानक भाषा कुछ बोलियों को बिल्कुल समाप्त भी कर देती है। एक बात और है, मानक भाषा पर स्थानीय बोलियों का प्रभाव ही देखा जाता है।

एक उदाहरण द्वारा इसे आसानी से समझा जा सकता है- बिहार राज्य के बेगूसराय खगडिया, समस्तीपुर आदि जिलों में प्रायः ऐसा बोला जाता है-
हम कह देंगे। हम नै करेंगे आदि।
भोजपुर क्षेत्र में : हमें लौक रहा है (दिखाई पड़ रहा है। हम काम किये (हमने काम किया)
पंजाब प्रान्त का असर: हमने जाना है (हमको जाना हैं)
दिल्ली - आगरा क्षेत्र मे : वह कहवे था / मैं जाऊँ। मेरे को जाना है।
कानपुर आदि क्षेत्रों में : वह गया हैगा।
एक भाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ हो सकती हैं, जबकि एक बोली में कई भाषाएँ नहीं होतीं।
बोली बोलनेवाले भी अपने क्षेत्र के लोगों से तो बोली में बातें करते हैं; किन्तु बाहरी लोगों से भाषा का ही प्रयोग करते है।
ग्रियर्सन के अनुसार भारत में 6 भाषा-परिवार, 179 भाषाएँ और 544 बोलियों है-

(क) भारोपीय परिवार : उत्तरी भारत में बोली जानेवाली भाषाएँ।
(ख) द्रविड परिवार : तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम।
(ग) आस्ट्रिक परिवार : संताली, मुंडारी, हो, सवेरा, खडिया, कोर्क, भूमिज, गढ़वा, पलक, वा, खासी, मोनख्मे, निकोबारी।
(घ) तिव्वती चीनी : लुशेइ, मेइथेइ, मारो, मिश्मी, अबोर - मिरी, अक।
(ङ) अवर्गीकृत : बुरूशास्की, अंडमानी भर
(च) करेन तथा मन : बर्मा की भाषा (जो अब स्वतंत्र हैं)

हिन्दी भाषा

बहुत सारे विद्वानों का मत है कि हिन्दी भाषा संस्कृत से निष्पन्न है; परन्तु यह बात सत्य नहीं है। हिन्दी की उत्पत्ति प्राकृत से। प्राकृत भाषा अपने पहले की पुरानी बोलचाल की संस्कृत से निकली है। स्पष्ट है कि हमारे आदिम आर्यों की भाषा पुरानी संस्कृत थी। उनके नमूने ऋग्वेद में दिखते है। उसका विकास होते-होते कई प्रकार की प्राकृत भाषाएँ पैदा हुई। हमारी विशुद्ध संस्कृत किसी पुरानी प्राकृत से ही परिमार्जित हुई। प्राकृत भाषाओं के बाद अपभ्रंशों का जन्म हुआ और उनसे वर्तमान संस्कृतोत्पन्न भाषाओं की। हमारी वर्तमान हिन्दी, अर्द्धगामी और शौरसेनी अपभ्रंश से निकली है।

हिन्दी भाषा और उसका साहित्य किसी एक विभाग और उसके साहित्य के विकसित रूप नहीं हैं; वे अनेक विभाषाओं और उनके साहित्यों की समष्टि का प्रतिनिधित्व करते है। एक बहुत बड़े क्षेत्र - जिसे चिरकाल से मध्यदेश कहा जाता रहा है-की अनेक बोलियों के ताने-बाने से बुनी यही एक ऐसी आधुनिक भाषा है, जिसने अनजाने और अनौपचारिक रीति से देश की ऐसी व्यापक भाषा बनने का प्रयास किया था, जैसी संस्कृत रहती चली आई थी; किन्तु जिसे किसी नवीन भाषा के लिए अपना स्थान तो रिक्त करना ही था।

वर्तमान हिन्दी भाषा का क्षेत्र बड़ा ही व्यापक हो चला है। इसे निम्नलिखित विभागों में बाँटा गया है-

(क) बिहारी भाषा : बिहारी भाषा बँगला भाषा से अधिक संबंध रखती है। यह पूर्वी उपशाखा के अंतर्गत है और बँगला, उडिया और आसामी की बहन लगती है। इसके अंतर्गत निम्न बोलियाँ हैं- मैथिली, मगही, भोजपुरी, पूर्वी आदि। मैथिली के प्रसिद्ध कवि विद्यापति ठाकुर और भोजपुरी के बहुत बड़े प्रचारक भिखारी ठाकुर हुए।

(ख) पूर्वी हिन्दी : अर्द्धमागधी प्राकृत के अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी निकली निकली है गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस - जैसे महाकाव्यों की रचना पूर्वी हिन्दी में ही की। दूसरी तीन बोलियाँ है- अवधी, बोली और छत्तीसगढी। मलिक मोहम्मद जायसी ने अपनी प्रसिद्ध रचनाएँ इसी भाषा में लिखी है।

(ग) पश्चिमी हिन्दी : पूर्वी हिन्दी तो बाहरी और भीतरी दोनों शाखाओं की भाषाओं के मेल से बनी है; परन्तु पश्चिमी हिन्दी का संबंध भीतरी शाखा से है।

यह राजस्थानी, गुजराती और पंजाबी से संबंध रखती है। इस भाषा के कई भेद है- हिन्दुस्तानी, ब्रज, कन्नौजी, बुंदेली, बाँगरू और दक्षिणी।

गंगा-यमुना के बीच मध्यवर्ती प्रान्त में और उसके दक्षिण दिल्ली से इटावे तक ब्रजभाषा बोली जाती है। गुडगाँव और भरतपुर, करोली और ग्वालियर तक ब्रजभाषी है। इस भाषा के कवियों में सूरदास और बिहारीलाल ज्यादा चर्चित हुए।

कन्नौजी, ब्रजभाषा से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। इटावा से इलाहाबाद तक इसके बोलनेवाले है। अवध के हरदोई और उन्नाव में यही भाषा बोली जाती हैं।

बुंदेली बुंदेलखंड की बोली है। झाँसी, जालौन, हमीरपुर और ग्वालियर के पूर्वी प्रान्त, मध्यप्रदेश के दमोह छत्तीसगढ़ के रायपुर, सिउनी, नरसिंहपुर आदि स्थानों की बोली बुँदेली है। छिंदवाडा और हुशंगाबाद के कुछ हिस्सों में भी इसका प्रचार है।

हिसार, झींद, रोहतक, करनाल आदि जिलों में बाँगरू भाषा बोली जाती है। दिल्ली के आसपास की भी यही भाषा है।

दक्षिणी हिन्दी बोलनेवाले मुंबई, बरोदा, बरार, मध्य प्रदेश, कोचीन, कुग, हैदराबाद, चेन्नई, माइसोर और ट्रावनकोर तक फैले हैं। इन क्षेत्रों के लोग मुझे या मुझको की जगह 'मेरे को' बोलते हैं।

भारत की भाषाओं की सूची

क्र.सं.	भाषाएँ	बोलनेवालों का अनुपात % में
1	संस्कृत	0.01
2	मैथिली	09
3	मराठी	7.5
4	नेपाली	0.3
5	पंजाबी	2.8
6	संथाली	0.6
7	मलयालम	3.6
8	मणिपुरी	0.2
9	असमिया	1.6
10	ओडिया	3.4
11	गुजराती	4.9
12	कश्मीरी	0.5
13	कन्नड	3.9
14	डोगरी	0.2
15	कोंकणी	0.2
16	बांग्ला	8.3
17	तमिल	6.3
18	सिंधी	0.3
19	उर्दू	5.2
20	बोडो	0.1
21	तेलुगू	7.9
22	हिन्दी	40.2

देवनागरी लिपि

'हिन्दी' और 'संस्कृत' देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। 'देवनागरी लिपी का विकास 'ब्राह्मी लिपी' से हुआ, जिसका सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात नरेश जयभट्ट के एक शिलालेख में मिलता है। 8वीं एवं 9वीं सदी में क्रमशः राष्ट्रकूट नरेशों बडौदा के ध्रुवराज ने अपने देशों में इसका प्रयोग किया था। महाराष्ट्र में इसे 'बालबोध' के नाम से संबोधित किया गया।

देवनागरी लिपि पर तीन भाषाओं का बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

(i) फारसी प्रभाव : पहले देवनागरी लिपि में जिह्वामूलीय ध्वनियों को अंकित करने के चिह्न नहीं थे, जो बाद में फारसी से प्रभावित होकर विकसित हुए- क, ख, ग, ज, फ

(ii) बांग्ला - प्रभाव : गोल-गोल लिखने की परम्परा बांग्ला लिपि के प्रभाव के कारण शुरू हुई।

(iii) रोमन-प्रभाव विराम - चिह्नों, जैसे - अल्प विराम, अर्द्धविराम, प्रश्नसूचक चिह्न, विस्मयसूचक चिह्न, उद्धरण चिह्न एवं पूर्ण विराम में 'खड़ी पाई' की जगह 'बिन्दु' (Point) का प्रयोग होने इससे प्रभावित हो विभिन्न लगा।

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ :

- इसके ध्वनिक्रम पूर्णतया वैज्ञानिक हैं।
- प्रत्येक वर्ग में अघोष फिर सघोष वर्ण है।
- वर्गों की अंतिम ध्वनियाँ नासिक्य है।
- छपाई एवं लिखाई दोनों समान है।
- हस्व एवं दीर्घ में स्वर बॅटे है।
- निश्चित मात्राएँ है।
- उच्चारण एवं प्रयोग में समानता है।
- प्रत्येक के दिए अलग लिपि चिह्न है।

ध्वनि

'ध्वानि' का अर्थ है-वर्ण या भाषा की लघुतम इकाई। इसका खंड या टुकड़ा नहीं हो सकता।
अर्थात 'वर्ण वह मूल ध्वनि है, जिसका खंड नहीं होता। "
वर्णों या ध्वनियों के क्रमबद्ध समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं।।
हिन्दी वर्णमाला में कुल 46 वर्ण है-

1. स्वर वर्ण (11)

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ और औ।

स्वर वर्णों का उच्चरण बिना रुके लगातार होता है। ऊपर के किसी वर्ण का उच्चारण लगातार किया जा सकता है सिर्फ 'ऋ' वर्ण को छोड़कर; क्योंकि ऋ का लगातार उच्चारण करने पर 'इ' स्वर आ जाता है।

उच्चारण में लगनेवाले समय के आधार पर स्वर वर्णों को दो भागों में बाँटा गया है-

(a) मूल या हस्व स्वर - अ, इ, उ और ऋ

(b) दीर्घ स्वर - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, और औ

ए: आ /आ + इ/ई (गुण होने के कारण)

ओ : आ / आ + उ/ऊ (गुण होने के कारण)

ऐ : अ / आ + ए (वृद्धि होने के कारण)

औ : अ/आ + ओ (वृद्धि होने के कारण)

जाति के अनुसार स्वर वर्णों को दो भागों में रखा गया है-

(a) सजातीय/ सवर्ण स्वर : इसमें सिर्फ मात्रा का अंतर होता है। ये हस्व और दीर्घ के जोडेवाले होते है। जैसे- अ-आ, इ-ई, उ-ऊ

(b) विजातीय/असवर्ण स्वर : ये दो भिन्न उच्चारण स्थानवाले होते है। जैसे-

अ- इ, उ - ओ आदि।

स्वरों के प्रतिनिधि रूप, जिनसे व्यंजन वर्णों का उच्चारण हो पाता है 'मात्रा' कहते हैं।

2. व्यंजन वर्ण (33)

व्यंजन वर्णों का उच्चारण रुक-रुक कर होता है। ये वर्ण आधी मात्रावाले होते हैं, इसलिए बिना स्वर के इनका उच्चारण असंभव है।

व्यंजन वर्णों को तीन भागों में बाँटा गया है-

(a) स्पर्श व्यंजन : ये वर्ण विभिन्न वागिन्द्रियों (कंठ, तालु, मूदर्धा, दन्त, ओष्ठ आदि) से स्पर्श क कारण उच्चरित होते हैं। इसके अंतर्गत निम्नलिखित वर्ण आते है-

कवर्ग : क् ख् ग् घ् ड्

चवर्ग : च् छ् ज् झ् ञ

टवर्ग : ट् ठ् ड् ढ् ण् (ड, ढ)

तवर्ग: त् थ् द् ध् न्

पवर्ग : प् फ् ब् भ् म्

(b) अन्तःस्थ व्यंजन : ये वर्ण स्पर्श एवं ऊष्म के बीच आते है। इसके अंतर्गत य्, र्, ल् और व्- ये चार ध्वनियाँ आती है।

(c) ऊष्म व्यंजन : ये ऐसे वर्ण है, जिनके उच्चारण में विशेष घर्षण के कारण मुख से गर्म हवा निकलती हैं। इसके अंतर्गत श्, ष्, स् और ह् आते हैं।

3. अयोगवाह वर्ण: 'अनुस्वार' और 'विसर्ग' अयोगवाह वर्ण है। ये स्वर एवं व्यंजन दोनों द्वारा ढोए जाते हैं।

जैसे-

अं-अः (स्वर द्वारा) कं- कः (व्यंजन द्वारा)

उच्चारण में वायु - प्रक्षेप की दृष्टि से या काकल के आधार पर वर्णों के दो प्रकार है-

(a) अल्पप्राण : ऐसे वर्ण, जिनके उच्चारण में वायु की सामान्य मात्रा रहती है और हकार-जैसी ध्वनि बहुत ही कम होती है। इसके अंतर्गत सभी स्वर वर्ण, वर्गों के प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण, अनुस्वार और अन्तःस्थ व्यंजन आते हैं। इसकी कुल संख्या 11 + 15 + 1 + 4 =31 है।

(b) महाप्राण : महाप्राण ध्वनियों के उच्चारण में वायु की पर्याप्त मात्रा होती हैं, जिसके कारण हकार-जैसी ध्वनि स्पष्ट दिखती है। इसके अंतर्गत सभी वर्गों के द्वितीय और चतुर्थ व्यंजन, विसर्ग और ऊष्म व्यंजन आते हैं। इसकी कुल संख्या 10 + 1 + 4 = 15 है।

स्वर - तंत्री के आधार पर चर्णों को दो अन्य भागों में भी बाँटा गया है–

(a) घोष या सघोष वर्ण : घोष ध्वनियों के उच्चारण में स्वर - तंत्रियों आपस में मिल जाती है और वायु धक्का देते बाहर निकलती है। फलतः झंकृति पैदा होती है। इसके अंतर्गत सभी स्वर वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण, अन्तःस्थ और ह आते है।

(b) अधोष वर्णों के उच्चारण में स्वर - तंत्रियाँ परस्पर नहीं मिलती। फलतः वायु, आसानी से निकल जाती हे। इस वर्ग में वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण और तीनों स (श, ष, स) आते है।

आभ्यन्तर प्रयत्न के आधार पर स्वरों को चार और व्यजनों को आठ वर्गों में रखा गया है-

	प्रकार	**वर्ण**
स्वर	संव्रत स्वर	इ, ई, उ और ऊ
	अर्द्धसंवृत स्वर	ए, ऐ, ओ और औ
	अर्द्धविवृत स्वर	अ
	विवृतस्वर	आ

	प्रकार	**वर्ण**
व्यंजन	स्पर्श व्यंजन	क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प. फ, व, भ
	स्पर्श संघर्षी व्यंजन	न, छ, ज और झ
	संघर्षी व्यंजन	म, श, ह, ख, ग, ज, फ और व
	अनुनासिक	छ, ञ, ण, न, म और अनुस्वार
	पार्श्विक	ल
	लुंठित / प्रकंपी	र
	उत्क्षिप्त	ड, ढ
	अर्द्ध स्वर	य और व

उच्चारण-स्थान की दृष्टि से वर्णों को निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है-

	प्रकार	**वर्ण**
1.	कंठ्य वर्ण	- अ, आ, कवर्ग, विसर्ग और ह
2.	तालव्य वर्ण	- इ, ई, चवर्ग, य और श
3.	मूर्द्धन्य वर्ण	- ऋ, टवर्ग, र और ष

4. दंत्य वर्ण - तवर्ग और स
5. वर्त्स्य वर्ण - ल
6. ओष्ठ्य वर्ण - उ, ऊ और पवर्ग
7. कष्ठ- तालव्य वर्ण - ए और ऐ
8. कण्ठोष्ठ्य वर्ण - ओ और औ
9. दन्तोष्ठ्य वर्ण - व
10. नासिक्य वर्ण - पंचमाक्षर और अनुस्वार
11. अलिजिह्व वर्ण - क, ख, ग, ज और फ

उच्चारण करने की स्थिति में एक ध्वनि के बाद दूसरी ध्वनि क्रमशः आती रहती है और ध्वनियों के मध्य आवश्कतानुसार अल्पकालिक विराम की अवस्था आती है। इसी को 'संगम' कहा जाता है। इस एक ध्वनि से दूसरी ध्वनि पर जाने के दो तरीके होते हैं-

(a) कभी वक्ता सीधे पहली से दूसरी ध्यानि पर चला जाता है। जैसे -
तुम् (तुम्हारा के उच्चारण में)

(b) कभी वक्ता थोडा स्यादा समय लता है। जैसे- तुम हारे (तुम्हारे के उच्चारण में)
संगम के लिए किसी विराम चिन्ह की आवश्यकता नहीं पडती है। इसके प्रयोग से शब्दों या वाक्यों के अर्थो में भिन्नता आ सकती है। जैसे-
नफीस - सुन्दर (एक साथ उच्चारित होने पर)
न फीस - निःशुल्क (अलग-अलग उच्चारित होने पर)
सोना- स्वर्ण सोना- मत सो
वाक्यों में प्रयोग देखें-
वह बैलगाडी खींचता है। (कोई व्यक्ति)
वह बैल गाडी खींचता है। (बैल के बारे में)

उच्चारण के समय जब स्वरों पर अधिक बल पडता है तब उसे बलाघात या स्वराघात कहा जाता है।

यह तीन तरह का होता है-

1. **वर्ण-बलाघात :** इससे अर्थ में अन्तर आ जाता है। जैसे-पिट-पीट, लुट-लूट
इन उदाहरणों में स्पष्ट देखा जा रहा है कि 'पि' और 'लु' पर बलाघात के कारण अर्थों अंतर आ गया है।
2. **शब्द-बलाघात :** इससे वाक्यों के अर्थों में स्पष्टता आती है।
3. **वाक्य - बलाघातः** इसमें वाक्य के भिन्न-भिन्न पदों पर बलाघात के कारण भावों में अंतर देखा जाता है।

ध्वनियों की उस छोटी से छोटी इकाई को 'अक्षर' कह जाता है, जिनका उच्चारण एक झटके में होता है। जैसे-
आ- एक ध्वनिवाला अक्षर
खा- दो ध्वनियों वाला अक्षर
बैठ- तीन ध्वनियों वाला अक्षर

अक्षर दो प्रकार के होते हैं-

(a) बद्धाक्षर : जिसकी अंतिम ध्वनि हलंतयुक्त हो। जैसे- श्रीमान्, जगत्, परिषद् आदि।

(b) मुक्ताक्षर : जिसकी अंतिम ध्वनि स्वर हो। जैसे- खा, ला, पी, जा, जगत आदि।
जब कोई व्यंजन वर्ण स्वयं से ही संयोग करें, तो वह 'युग्मक ध्वनि' और जब किसी अन्य व्यंजन वर्ण से करे तो वह 'वयंजन गुच्छ कहलाता है।

शॉर्ट ट्रिक

वर्णों के उच्चारण स्थान के लिए इसे याद कर लें

'अकह विसर्ग' कण्ठराम। 'इचयश' भी हैं तालु राम॥
'ऋ' से जानो मूर्द्धा जी। 'लृतस' पुकारो दन्त जी ॥
'उप' आते है ओष्ठ में। केवल 'व' दन्तोष्ठ में ॥
'ए-ऐ' कहे कण्ठ- तालु। 'ओ - औ' कहे कण्ठोष्ठ में ॥
नासिका से पंचमाक्षर। जिवा रखो प्रकोष्ठ में ॥

Unleash the topper in you

2 CHAPTER संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
- जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

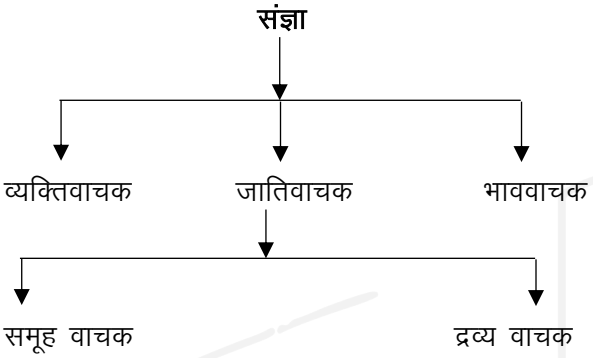

1.व्यक्तिवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

- व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

2.जातिवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3.भाववाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

- प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
- भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
  1. जातिवाचक संज्ञा से
  2. सर्वनाम से
  3. विशेषण से
  4. क्रिया से
  5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरता
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालाक	चालाकी
निपुण	निपुणता
शिष्ट	शिष्टता

Unleash the topper in you

गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा –** ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।
2. **द्रव्य वाचक संज्ञा –** किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
   जैसे – दूध, घी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, ऑक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।

नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।

आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।

सर दार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।
  जैसे –

गरीब	गरीबों
बड़ा	बड़ों
अमीर	अमीरों

Toppersnotes Unleash the topper in you

3 CHAPTER सर्वनाम

परिभाषा – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।

- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।
  जैसे – अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद – सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं

1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहनें वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए, के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है

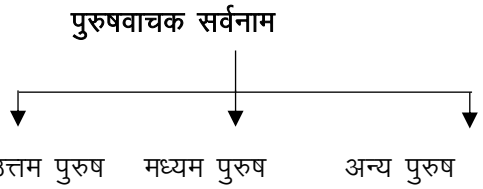

(i) उत्तम पुरुष – बोलने वाला / लिखने वाला
जैसे – मैं, हम, हम सब।

(ii) मध्यम पुरुष – श्रोता/सुनने वाला
जैसे – तू, तुम, आप, आप सब।

(iii) अन्य पुरुष – बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारें में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. निश्चय वाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
पास की वस्तु के लिए – यह
दूर की वस्तु के लिए – वह

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – वे सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारें में निश्चतता का बोध नहीं होता हैं। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – कोई

- सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग
  निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
- रमन को कोई बुला रहा है।
- दूध मे कुछ गिरा है।

4. संबंधवाचक सर्वनाम – दो उपवाक्यों के बीच आकर सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने
वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।
जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता हैं वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?
कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था ?

6. निजवाचक सर्वनाम – ऐसे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – आप, स्वयं, खुद।
जैसे – मैं अपने आप चला जाऊँगा।
सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।

(i) अगर 'आप' शब्द का प्रयोग 'तुम' शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।

(ii) 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।

(iii) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति में परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त हो तो वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।

4 CHAPTER वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं ।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना।
- भाशा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह अ म् अ) है ।

लिपि –किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विषेशताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के षुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण – हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता।

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है।

जैसे :– क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :– 2 प्रकार है।

(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :– स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है। हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :– मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार है ।

(i) ह्रस्व स्वर – जिनके उच्चारण मे एक मात्रा का समय लगता है ।

जैसे – अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या – 4)

नोट :– (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर – जिनके उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है – आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ, औ (कुल संख्या – 7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है । स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।

जैसे – अ^3, आ^3, इ^3, ई^3, उ^3, ऊ^3, ए^3, ऐ^3, ओ^3, औ^3,

(2) उच्चारण के आधार पर :– (2 प्रकार है)

(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर आती है ।

नोट – अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।

जैसे – अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है।

बिना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर – (3 प्रकार है)

(i) अग्र स्वर :– उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।

जैसे – इ, ई, ए, ऐ

(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।

जैसे – आ, उ, ऊ, ओ, औ

पहचान :– निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार है ।

(i) वृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना।

जैसे :– उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर–नीचे फैलना।

जैसे – अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार है।

(i) संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना।

जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) विवृत – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा खुलना। जैसे – आ

(iv) अर्द्धविवृत – उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना।

जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है।

हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है ।

जिनको तीन भागों में बाँटा गया है ।

(i) स्पर्श व्यंजन – (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)

(ii) अंतः स्थ व्यंजन – (04)

(iii) ऊष्म व्यंजन – (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करने के बाद मुख से बाहर निकलती है तो वह स्पर्श व्यंजन कहलाती है ।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –

(अ) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ङ्.

(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्

(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्

(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्

(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है ।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4 है ।

जैसे :– य् व् र् ल्

(iii) ऊष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है।

कुल ऊष्म व्यंजन – 4 है।

जैसे – ष् श् स् ह्

संयुक्त व्यंजन – इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है ।

क्ष – क् + श

त्र – त् + र

ज्ञ – ज् + ञ

श्र – ष् + र

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार का है ।

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर

(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

i. कण्ठ स्थान – 'कण्ठ्य वर्ग'
   सूत्र – अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः
   अ, आ, क वर्ग (क,ख,ग,घ,ङ.) ह, विसर्ग (अः)

ii. तालु स्थान – तालव्य वर्ग
   सूत्र – इचुयशानां तालु
   इ, ई, च वर्ग (च,छ,ज,झ,´) य, ष

iii. मूर्धा स्थान – मूर्धन्य वर्ण
   सूत्र – ऋटुरशाणां मूर्धा
   ऋ, ॠ ट वर्ग (ट,ठ,ड,ढ,ण) र, श

iv. दन्त स्थान – दन्त्य वर्ण
   सूत्र – लृतुलसानां दन्ता
   लृ, त वर्ग (त,थ,द,ध,न) ल, स

v. ओष्ठ स्थान – ओष्ठय वर्ण
   सूत्र – उपूपध्यानीया ना मो श्ठौ
   उ, ऊ, प वर्ग (प,फ,ब,भ,म)
   उपध्मानीय वर्ण (ऱ प, ऱ फ)

vi. नासिका स्थान – नासिक्य वर्ण
   सूत्र – नासिका अनुस्वास्य (अं)
   ञमङणनानां नासिका च
   (ङ् ञ ण न म्)

vii. दन्तोष्ठ स्थान – दन्तोष्ठय वर्ण
   सूत्र – वकारस्य दन्तोष्ठम् – व

(2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –

(i) कंपन के आधार पर

(ii) श्वास वायु के आधार पर

(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कंपन के आधार पर – इसके आधार पर दो प्रकार के वर्ण होते है ।

a) अघोष वर्ण – प्रत्येक वर्ग का पहला + दूसरा वर्ण + ष,श,स+विसर्ग
   अघोष वर्ण की ट्रिक – 1,2 बजते ही उश्मा में विसर्जन का अवघोष हो जाता है । प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण, उश्म वर्ण (ष,श,स) विसर्ग

b) घोष वर्ण – प्रत्येक वर्ग का 3,4,5 वर्ण + ड, ढ + य,र,ल,व,ह + सभी स्वर + अनुस्वार
   घोष वर्ण कि ट्रिक – 3,4,5 की घुस लेते ही सभी स्वरों को ड ढ़ के साथ नियम अनुसार अंदर कर दिया।
   प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण + सभी स्वर + ड़ ढ़ + अनुस्वार

(ii). श्वास वायु के आधार पर – मुख्यतः दो प्रकार के होते है ।

a) अल्पप्राण – प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवा वर्ण + + ड़ ऱ, ल, व + सभी स्वर
   अल्प प्राण कि ट्रीक –अल्प आयु में 1,3,5 का अन्त हुआ व ड़ के साथ सभी स्वर्ग गये ।
   अल्पप्राण में आने वाले व्यंजन – प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण + अतःस्थ व्यंजन + ड़ सभी स्वर

b) महाप्राण – प्रत्येक वर्ग का 2,4 वर्ण + ढ + ष, श, स, ह
   महाप्राण –महाम 2,4 घण्टे ढ़का रहने से उश्मा बढती है ।
   महाप्राण में आने वाले वर्ण – प्रत्येक वर्ग का 2 व 4 वर्ण, + ऊष्म वर्ण (ष,श,स) + ह वर्ण

(iii). उच्चारण के आधार पर –

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते है ।

1) स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
2) स्पर्श संघर्शी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
3) संघर्षी व्यंजन (4) – ष, श, स, ह
4) नासिक व्यंजन (5) – ड., ´, ण, न, म
5) उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड, ढ
6) प्रकंपित व्यंजन (1) – र
7) पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
8) संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य (''वर्ण विचार'' से संबंधित)

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।

	समानाक्षर स्वर	संधि स्वर
(i)	आ – अ + अ	ए – अ + इ
(ii)	ई – इ + इ	ऐ – अ – ए
(iii)	ऊ – उ + उ	औ – अ + ओ

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

क़ – क़रीब
ख़ – ख़ाना
ग़ – ग़म
ज़ – ज़रा
फ़ – फ़न, फ़ाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (é)
जैसे – कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अग्रेजी भाषा से हुआ है।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान ''विप्रसाद सितारे हिंद'' को जाता है।
- काकल वर्ण के अन्तर्गत, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है।
- वर्त्स वर्णो में न, स, ल को शामिल किया जाता है।
- उच्चारण स्थानों के अलावा शरीर के वे अंग जो उच्चारण करनें में सहायक हो करण कहलाते है। इसकी कुल संख्या चार होती है।
  (1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ)
  (3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोड़ा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते है।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होनें का परिचायक है । स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खड़ी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खड़ी पाई हटा दी जाती है। उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है।
  जैसे– विद्या, पाठ्य, अपराह्न, पट्टा आदि।

1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है।
2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है।
3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है।
4. ईशत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है।
5. ईशद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (ष, श, स, ह)
6. रक्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

नोट – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ण होते है।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें।

स्वर	व्यंजन	कुल
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड., ढ. + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	क़ ख़ ग़ ज़ फ़ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते हैं।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूर्धा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।

जैसे – ड. ढ.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, अड्डा, खण्ड, मण्डल आदि ।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है।
  जैसे – पढाई, लडाई, सड़क, पकड़ना, ढूँढना आदि।

रकार/रेफ या र संबंधित नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात्, पुनर्जन्म, पुनर्निमाण, आशीर्वाद।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

Toppersnotes
Unleash the topper in you

5 CHAPTER वर्तनी शुद्धि

वर्तनी के संदर्भ में हमें कुछ तथ्यों पर ध्यान रखना अनिवार्य होता है –

(क) शब्द के शुद्ध लेखन में किन–किन लिपि चिह्नों का प्रयोग होना चाहिए।

(ख) शब्द में प्रयुक्त विभिन्न लिपि चिह्नों को अनुकूल क्रम में प्रयोग करना।

हिन्दी वर्तनी के संदर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार अशुद्ध करना अनिवार्य है।

1. मात्रा संबंधी अषुद्धियाँ

आ> अ	**अषुद्ध**	**शुद्ध**	**अषुद्ध**	**शुद्ध**
	अखांडनीय	अखंडनीय	अत्याधिक	अत्यधिक
	अनाधीकार	अनाधिकार	आजकाल	आजकल
	आपना	अपना	आधीन	अधीन
	आलौकिक	अलौकिक	दावात	दवात
	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप		
आ> अ	अगामी	आगामी	अदान–प्रदान	आदान–प्रदान
	अहार	आहार	चहिए	चाहिए
	नराज	नाराज	परलौकिक	पारलौकिक
	परिवारिक	पारिवारिक	संसारीक	सांसारीक
ई>इ	ईधर	इधर	उत्पत्ती	उत्पत्ति
	उन्नती	उन्नति	उपलब्धी	उपलब्धि
	कवी	कवि	क्योंकी	क्योंकि
	नालीयाँ	नालियाँ	पूर्ती	पूर्ति
	प्राप्ती	प्राप्ति	मुनी	मुनि
	व्यक्ती	व्यक्ति	शक्ती	शक्ति
	साथीयों	साथियों	हानी	हानि
इ>ई	अदि्वतिय	अदि्वतीय	आशिर्वाद	आशीर्वाद
	केन्द्रिय	केन्द्रीय	दिक्षा	दीक्षा
	दिवाली	दीवाली	निरसता	नीरसता
	निरिक्षण	निरीक्षण	पत्नि	पत्नी
	परिक्षा	परीक्षा	पितांबर	पीतांबर
	पूजनिय	पूजनीय	बिमार	बीमार
	बिमारी	बीमारी	श्रीमति	श्रीमती
ऊ> उ	अनूकूल	अनुकूल	आयु	आयु
	कृपालू	कृपालु	गुरू	गुरु
	दयालू	दयालु	धूलाइ	धुलाई
	पटू	पटु	परूष	पुरुष
	पशू	पशु	पुरूश	पुरुष
	प्रभू	प्रभु	मधू	मधु
	रूपया	रुपया	शिशू	शिशु
	शुरु	शुरू	साधू	साधु
उ> ऊ	उपर	ऊपर	टुर	टूर
	पुर्ण	पूर्ण	पुर्व	पूर्व
	पुज्य	पूज्य	मुली	मूली
	शुन्य	शून्य	सुप	सूप
	सुर्य	सूर्य	स्वरुप	स्वरूप

2. अकारण अनुनासिकता

रँण	रण	तँन	तन
खाँन	खान	पाँन	पान
तँम	तम	दाँम	दाम
राँम	राम		

3. अनुनासिकता (चंद्रबिन्दु)

आंख	आँख	ऊंचा	ऊँचा
कांच	काँच	गूंगा	गूँगा
चांद	चाँद	जहां	जहाँ
दांत	दाँत	बांस	बाँस
यहां	यहाँ	वहां	वहाँ
हां	हाँ		

4. अनुस्वार

अँक	अंक (अङ्क)	पँक	पंक (पङ्क)
रँक	रंक (रङ्क)	शँकर	शंकर (शङ्कर)
पँख	पंख (पङ्ख)	अँग	अंग (अङ्ग)
कँगन	कंगन (कङ्गन)	जँग	जंग (जङ्ग)
रँग	रंग (रङ्ग)	कँचन	कंचन (कञ्चन)
मँज	मंजुल (मञ्जुल)	घँटी	घंटी (घण्टी)
पँडा	पंडा (पण्डा)	पँत	पंत (पन्त)
पँथ	पंथ (पन्थ)	चँदन	चंदन (चन्दन)
पँप	पंप (पम्प)	गँभीर	गंभीर (गम्भीर)
सँसार	संसार	हिन्सा	हिंसा

यदि नासिक्य व्यंजन के पूर्व समान अर्थात् वही नासिक व्यंजन अर्ध रूप में प्रयुक्त हो, तो उसके मूल रूप में ही लिखना होगा, उसका अनुस्वार रूप नहीं होता है, यथा–

भिंन	भिन्न	अंन	अन्न
संमान	सम्मान	समिलित	सम्मिलित

5. 'ण' नासिक्य व्यंजन

डँ >ण	गँडेश	गणेश	रँडँभूमि	रणभूमि
	रँड	रण	गँडँना	गणना
	रामायँडँ	रामायण	आचरन	आचरण
	शरँडँ	शरण		
न>ण	आक्रमन	आक्रमण	आचरन	आचरण
	किरन	किरण	गनित	गणित
	गुन	गुण	तृन	तृण
	निरीक्षन	निरीक्षण	प्रान	प्राण
	शरन	शरण	स्मरन	स्मरण

6. 'र' प्रयोग

अरथ	अर्थ	आर्शीवाद	आशीर्वाद
आर्दश	आदर्श	करम	कर्म
धरम	धर्म	मरयादा	मर्यादा
वर्क्स	वर्क्स	वर्त्स्य	वर्त्स्य
कार्यकर्म	कार्यक्रम	चन्दर	चन्द्र
तीवर	तीव्र	परसन्न	प्रसन्न
परसाद	प्रसाद	परतिज्ञा	प्रतिज्ञा
समुन्दर	समुद्र	सहसत्र	सहस्त्र
सत्रोत	स्त्रोत	टरक	ट्रक
टराम	ट्राम	डरम	ड्रम

7. 'ब > व'

पूर्ब	पूर्व	बन	वन
बनस्पति	वनस्पति	बर्षा	वर्षा
बाणी	वाणी	बिशधर	विषधर
बिलास	विलास	बैदेही	वैदेही

8. श, ष, स प्रयोग

स > श

असोक	अशोक	आदर्स	आदर्श
आसा	आशा	देसी	देशी
प्रसंसा	प्रशंसा	विस्वास	विश्वास
संकर	शंकर	पस्चात	पश्चात्

'ष, स > ष'

कस्ट	कष्ट	अभीस्ट	अभीष्ट
घनिस्ट	घनिष्ट	रास्ट्र	राष्ट्र
भविस्य	भविष्य	संतुश्ट	संतुष्ट

'ष > स'

नमश्कार	नमस्कार	प्रशाद	प्रसाद
शंकट	संकट	शाशन	शासन
शुशोभित	सुशोभित	हंश	हंस

9. 'ऋ > र' प्रयोग

उपगृह	उपग्रह	भृश्ट	भ्रष्ट
गृहण	ग्रहण	रिशि	ऋषि
रित	ऋतु	रिण	ऋण
श्रंगार	शृंगार	ह्रदय	हृदय

10. 'ज्ञ – ग्य' प्रयोग

ग्यान	ज्ञान	आग्या	आज्ञा
ग्यापन	ज्ञापन	प्रतिग्या	प्रतिज्ञा
विग्यान	विज्ञान		
भाज्ञ	भाग्य		

11. 'छ – क्ष' प्रयोग

कछा	कक्षा	छमा	क्षमा
छुद्र	क्षुद्र	छेत्र	क्षेत्र
नछत्र	नक्षत्र	लछण	लक्षण
वपछ	विपक्ष		

12. अल्प्राण–महाप्राण प्रयोग

गढ्ढा	गड्ढा	पथ्थर	पत्थर
बध्धी	बग्घी	मख्खन	मक्खन

13. श्रुतिमूलक प्रयोग (जहाँ पर 'स्वर' सुनाई दे वहाँ स्वर का ही प्रयोग करें)

अपनायी	अपनाई	आये	आए
खाईये	खाइए	गये	गए
जाइये	जाइए	नयी	नई
पुरवायी	पुरवाई	बाधायें	बाधाएँ
बलिकायें	बालिकाएँ	बुलाये	बुलाएँ
लिये	लिए	समस्याये	समस्याएँ
सहनायी	शहनाई		

शुद्ध	अशुद्ध
अनधिकार	अनाधिकार
रुपया	रूपया
शुरू	शुरु
स्वरूप	स्वरुप
आचरण	आचरन
श्रृंगार	श्रृंगार
घनिष्ठ	घनिष्ट
खाइए	खाइये
अनुशंसा	अनुसंसा
प्रशंसा	प्रसंसा
अभिशासी	अभिसासी
कैलास	कैलाश
ज्योत्स्ना	ज्योत्सना
अन्तःसाक्ष्य / अन्तस्साक्ष्य	अन्त साक्ष्य
अनुगृहीत	अनुग्रहित
अनुग्रह	अनुगृह
जाग्रत	जागृत
जागृति	जाग्रति
महीना	महिना
इकाइयाँ	ईकाइयाँ
दवाई	दवाइ
दीवार	दिवार
इलाज	ईलाज
इमारत	ईमारत
ऊष्मा	उष्मा
उषा	ऊषा
वापस	वापिस
उपलक्ष्य	उपलक्ष
अन्तर्धान	अन्तर्ध्यान
प्रियदर्शिनी	प्रियदर्शनी
प्रदर्शनी	प्रदर्शिनी
दुरवस्था	दुरावस्था

गत्यवरोध	गत्यावरोध
अन्त्याक्षरी	अन्ताक्षरी
उंगली	अंगुली
कुआँ	कुआ
करेंगे	करेगें
उद्गार	उदगार
शृंखला	श्रृंखला
निरपराध	निरापराध
कवयित्री	कवियत्री
रचयिता	रचियता
पूजनीय	पूजनिय
सुंदरता	शुंदरता
धनाढ्य	धनाड्य
तैतालिस	तेंतालिस
उज्ज्वल	उज्जवल
अकस्मात्	अक्समात
अगम्य	अगमय
अतिथि	अतिथी
अद्वितीय	अद्वितय
अधोगति	अधोगती
अधीक्षक	अधिक्षक
आनुषंगिक	आनुसंगिक
निरवलंब	निरावलंब
परिशिष्ठ	परिशिष्ट
पश्चात्ताप	पश्चाताप
प्रतिनिधि	प्रतीनिधि
माहात्म्य	महात्म्य
याज्ञवल्क्य	याज्ञवलक्य
लब्धप्रतिष्ठ	लब्धप्रतिष्ट
शूर्पणखा	शूपर्णखा
सहस्त्र	शहास्त्र
सरोजिनी	सरोजनी
ईर्ष्या	इर्ष्या
गृहिणी	गृहणी
ऊर्ध्व	उर्ध्व
मुहूर्त	मुहुर्त
नूपुर	नुपूर
प्राणिशास्त्र	प्राणीशास्त्र
मंत्रिपरिपद्	मंत्रीपरिपद्
सन्न्यासी	सन्यासी
प्रस्तुति	प्रस्तुती
प्रस्तुतीकरण	प्रस्तुतिकरण
शुद्धि	शुद्धी
शुद्धीकरण	शुद्धिकरण
कर्ता	कर्त्ता
प्रज्वलित	प्रजवलित
कर्तव्य	कर्त्तव्य
वरिष्ठ	वरिष्ट
स्वादिष्ठ	स्वादिष्ट
मिष्टान्न	मिष्ठान्न
उच्छिष्ट	उच्छिष्ठ

निकृष्ट	निकृष्ठ
वाल्मीकि	वाल्मीकी
कैकेयी	केकैयी
न्योछावर	न्यौछावर
मध्याह्न	मध्याहन
पूर्वाह्न	पूर्वाहन
आह्वान	आहवान
उपर्युक्त	उपरोक्त
अधःपतन	अधपतन
अभयारण्य	अभ्यारण्य
अमावस्या	अमावस
अहल्या	अहिल्या
आशीर्वाद	आर्शीवाद
आह्लाद	आहलाद
उच्छृंखल	उच्छखल
उज्जयिनी	उज्जयिनी
उल्लिखित	उल्लेखित
ओखली	औखली
ऐच्छिक	एच्छिक
कार्यवाही	कारवाई
कौतुहल	कोतुहल
कृतकृत्य	कृत्कृत्य
कृपया	कृप्या
केन्द्रीय	केन्द्रिय
कौशल्या	कोशिल्या
गण्यमान्य	गणमान्य
गीतांजलि	गितांजली
घनिठ	घनिष्ट
चिह्न	चिहन
तंदुरूस्त	तदुरस्त
तात्कालिक	तत्कालिक
तत्त्वावधान	तत्वाधान
तदुपरांत	तदोपरांत
त्योहार	त्योंहार
निजी	नीजि
निधि	निधी
पडोसी	पडौसी
परिस्थिति	परिस्थिती
पुनरवलोकन	पुनरावलोकन
मल्लयुद्ध	मलयुद्ध
मातृभूमि	मातृभूमी
राजनीतिक	राजनैतिक
व्यावहारिक	व्यवहारिक
शुश्रूषा	शुश्रुषा
स्थायित्व	स्थायीत्व
प्रतीक्षा	प्रतिक्षा
दंपती	दंपति